● सुनो, समझो और सुनाओ :

४. संदेश

–पुष्पा अशोककुमार दुबे

जन्म : १ जुलाई १९६० मुंबई (महाराष्ट्र) **परिचय :** समसामयिक विषयों एवं विद्यालयीन गतिविधियों में विशेष अभिरुचि । आप राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापिका हैं । नए-नए उपक्रमों में सहभागिता निभाने वाली समस्त विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं ।

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखिका ने पत्रों के प्रकारों पर प्रकाश डाला है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

अगर दूरध्वनि एवं भ्रमणध्वनि न होते तो .....

गुरु जी : **(कक्षा में प्रवेश करते ही)** नए वर्ष की शुभकामनाएँ, बच्चो ! तुम सबका नया साल सुखमय और आनंदमय हो । सभी यशस्वी हो ।

सभी विद्यार्थी : धन्यवाद गुरु जी । आपको भी नए वर्ष की बहुत-बहुत बधाई ।

गुरु जी : अच्छा यह बताओ कि नए वर्ष के उपलक्ष्य में तुम्हें किसी का पत्र मिला क्या ? **(सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं । खुसर-फुसर करने लगते हैं ।)**

उज्ज्वल : गुरु जी, मेरे भाई को नियुक्ति पत्र आया था । उसे रेलवे में नौकरी मिल गई है । बधाई का तो नहीं देखा ।

प्रवर : गुरु जी, मेरे पिता जी को पत्र द्वारा पदोन्नति की सूचना प्राप्त हुई । उनका प्रमोशन हो गया है ।

सुव्रता : अरे वाह ! उज्ज्वल की तो चाँदी हो गई । गुरु जी ! उसे कहिए कि वह हम सब को पार्टी दे । **(उज्ज्वल झुककर सुव्रता को अँगूठा दिखाता है ।)**

मुक्ता : गुरु जी मेरी मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है ।

गुरु जी : शाबाश बच्चो ! तुम सबने देखा कि प्रवर के घर पदोन्नति पत्र, उज्ज्वल के यहाँ नियुक्ति का पत्र और मुक्ता की मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है । क्या तुम जानते हो कि पत्र कितने प्रकार के होते हैं ?

मुक्ता : गुरु जी निमंत्रण पत्र, नियुक्ति पत्र, पदोन्नति पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! इन पत्रों के बारे में तो हम अभी-अभी चर्चा कर ही रहे थे ।

उज्ज्वल : गुरु जी, वही सुनकर तो यह नकलची फटाफट बता दी ।

गुरु जी : प्रवर ! बहुत बुरी बात । ऐसा नहीं बोलते । तुम क्यों नहीं बोले ? चलो ! मुक्ता से क्षमा माँगो ।

उज्ज्वल : सॉरी मुक्ता ! मुझे क्षमा कर दो ।

मुक्ता : जाओ मैंने तुम्हें माफ किया ।

अध्ययन : गुरु जी, आप ही बताएँ । हमारे ध्यान में तो नहीं आ रहा है ।

गुरु जी : सोचो-सोचो । **(कुछ बच्चे सर खुजलाने लगते हैं । कुछ सिर नीचे कर लेते हैं ।)** प्रवर, तुम्हारे भाई को नियुक्ति पत्र मिला है । पत्र मिलने के पहले उसने कुछ तो किया होगा ?

अध्ययन : प्रार्थना पत्र दिया होगा ।

गुरु जी : शाबाश ! तुम्हारी बुद्धि चलने लगी है । **(सभी विद्यार्थी हँस पड़ते हैं ।)**

❑ विद्यार्थियों से संवाद का वाचन कराएँ । कक्षा में संवाद का नाट्यीकरण कराएँ । पत्रों के प्रकारों एवं उनकी विषय वस्तु पर चर्चा कराएँ । पत्र लेखन के प्रारूप पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार पत्र लेखन के लिए प्रेरित करें ।

सुनो तो जरा

दक्खिनी हिंदी की कोई कविता सुनो और सुनाओ ।

गुरु जी : रत्ना ! खड़ी हो जाओ । क्या बात है ? क्या सोच रही हो ?

रत्ना : गुरु जी ! मैं सोच रही थी कि पाँचवीं कक्षा में हम लोगों ने 'शुभकामना कार्ड' बनाना सीखा था । मैंने मुक्ता को दीपावली पर बधाई पत्र भेजा था । वह भी तो एक प्रकार हुआ न ?

गुरु जी : बिलकुल सही रत्ना । शाबाश ! तुम्हारी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है । शाबाश ! शाबाश !

अरुण : गुरु जी ! मेरी मम्मी बताती हैं कि जब टेलीफोन/मोबाइल नहीं थे तो उस समय हाल-चाल लेने के लिए चिट्ठी लिखते थे ।

गुरु जी : हाँ ! पहले कुशल-क्षेम पूछने के लिए पत्र व्यवहार ही प्रमुख साधन था ।

सौम्या : गुरु जी मेरे भाई ने अपने लिए बहुत सी पुस्तकें वी.पी.से मँगाई थी । उसमें एक पुस्तक फटी हुई थी । अब उसे क्या करना चाहिए ?

गुरु जी : सौम्या, अपने भाई से कहो कि वह प्रकाशक को शिकायती पत्र लिखे और पूरी जानकारी दे ।

प्रवर : गुरु जी, इस तरह तो यह व्यवसाय संबंधी काम हो गया ।

गुरु जी : वाह प्रवर ! तुम इस प्रश्न से हमें पत्र के प्रकार के संकलन की तरफ ले आए हो ? ऐसे पत्र जिसमें व्यापारिक बातें, वस्तु/माल की आपूर्ति, इनसे संबंधी शिकायती बातें हों उन्हें व्यावसायिक पत्र कहा जाता है ।

अध्ययन : गुरु जी, वे कुशल-क्षेम वाले पत्र क्या हैं ?

गुरु जी : बच्चो ! ऐसे पत्र जिसमें पारिवारिक बातें, हाल-चाल, शुभकामना, संदेश देने आदि की बातें होती हैं, ऐसे पत्र व्यक्तिगत पत्र कहे जाते हैं ।

मुक्ता : गुरु जी ! फिर तो निमंत्रण पत्र भी एक प्रकार हुआ न !

गुरु जी : हाँ ! जन्मदिन, विवाह, शुभकार्य आदि के लिए जब हम अपने मित्रों-संबंधियों को पत्र देकर बुलाते हैं तो इसे निमंत्रण पत्र कहा जाता है ।

प्रवर : गुरु जी ! मेरे भाई ने प्रार्थना पत्र भेजा था । उसका कौन-सा प्रकार हुआ ?

गुरु जी : अधिकारी, प्रशासक, संस्थाप्रधान आदि से जब हम कोई पत्राचार करते हैं तो उसे आवेदन पत्र कहते हैं ।

सौम्या : गुरु जी ! और कोई शेष है क्या ? कोई छूट तो नहीं गया ?

गुरु जी : हाँ सौम्या । राज्यशासन, केंद्रीय शासन के शासकीय, कार्यालयीन पत्रों को सरकारी पत्र कहते हैं । अच्छा, अब बताओ हमने कितने प्रकार के पत्रों के बारे जानकारी प्राप्त की ?

सभी एक साथ: व्यक्तिगत पत्र, निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी पत्र, व्यावसायिक पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! लेकिन अब इन पत्रों के नए रूप भी आ गए हैं । इन नए पत्रों के नाम कौन बताएगा?

(सब सोचने लगते है । कोई उत्तर नहीं देता । सब शांत हो जाते हैं ।)

गुरु जी : अरे भाई ! एस. एम. एस., ई-मेल, फैक्स तो हम अक्सर ही करते हैं । चलो, आज हमने सब पत्रों के प्रकार जानें । अब तुम भी पत्रों के प्रारूप और इसके अंगों के बारे में जानकारी संकलित करना । अगली बार हम इसकी जानकारी पढ़ेंगे । **(सभी बच्चे एक साथ- धन्यवाद गुरु जी)**

❑ विविध प्रकार के पत्रों एवं महापुरुषों के पत्र पढ़ने एवं उनके संग्रह करने के लिए प्रेरित करें । डाक विभाग से कौन-कौन-से पत्र आते हैं, पूछें । पत्र लेखन की परंपरा समाप्त हो रही है, कारणों पर चर्चा करें । 'कुरियर सेवा' समझाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

प्रमोशन = पदोन्नति

नकलची = नकल करने वाला

मुहावरे

चाँदी होना = बड़ा लाभ होना

अँगूठा दिखाना = चिढ़ाना

स्वयं अध्ययन

अपने मुख्याध्यापक/मुख्याध्यापिका को छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र लिखो ।

वाचन जगत से

अंतरजाल/पुस्तक से भारतीय डाक सेवा का इतिहास ज्ञात करो :

- पुरातन सेवाएँ
- आधुनिक सेवाएँ
- विकास

अध्ययन कौशल

भारत के औद्योगिक मानचित्र से ज्ञात करो कि वस्त्रोद्योग की मिलें कहाँ-कहाँ हैं, सूची बनाओ :

- राज्य
- निर्यात
- वस्त्रों के प्रकार

विचार मंथन

पत्र बोलते हैं, भावों के मर्म खोलते हैं ।

बताओ तो सही

सुवचन, उद्धरणों का संकलन करो और संबंधित आशय बताओ ।

मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

खोजबीन

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक के संदेश वाहकों के नाम ढूँढो और बताओ ।

❊ पाठ के आधार पर शब्द पहेली से पत्र के प्रकार ढूँढ़ो और लिखो :

व्य	पा	नि	आ	ई	मे
व्या	क्ति	रि	मं	वे	ल
व	यि	ग	त्र	फै	द
सा	क	ण	त	क्स	न

= ..... = ...

= ..... = ...

= ..... = ...

= ..... = ...

= ..... = ...

सदैव ध्यान में रखो

महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्र हमारी साहित्यिक धरोहर हैं ।

भाषा की ओर

दिए गए हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखो और दोनों शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके लिखो तथा इसी तरह के अन्य शब्द ढूँढ़ो ।

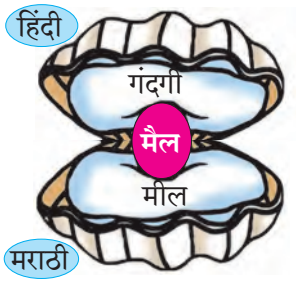

१. मेरे मन में कोई गंदगी नहीं है ।

२. मैं आज चार मील पैदल चला ।

१.----------

२.----------

१.----------

२.----------

१.----------

२.----------

१.----------

२.----------

१.----------

२.----------

१.----------

२.----------

१.----------

२.----------